सूरह — एक कहानी

सूरह क़ुरैश

क़ुरैश

पूरा सफ़र — भूख से बचाया, ख़ौफ़ से महफ़ूज़ किया —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 106 • 4 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

लि-ईलाफ़ि क़ुरैश

1. क़ुरैश को मानूस और महफ़ूज़ कर देने की वजह से।

ईलाफ़िहिम रिह्लतश्-शिता-इ वस्-सैफ़

2. सर्दी और गर्मी के सफ़र उनके लिए मानूस कर देने की वजह से।

फ़ल्-य'बुदू रब्ब हाज़ल्-बैत

3. तो उन्हें चाहिए कि इस घर के रब की इबादत करें।

अल्लज़ी अत'अ-महुम मिन जू'

4. जिसने उन्हें भूख में खाना खिलाया।

व आ-म-नहुम मिन ख़ौफ़

4. और उन्हें ख़ौफ़ से अमन दिया।

वो सूरह जो पिछली सूरह को जारी रखती है

बेटा, यह सूरह सूरह अल-फ़ील से ऐसे जुड़ी हुई है जैसे जुमला अपने टुकड़े से। कुछ असलाफ़, जिनमें उबई बिन काब (रज़ि0) अपने नुस्ख़े में शामिल हैं, इन दोनों को बहुत क़रीब समझते थे — और मानी सीधा एक से दूसरी में बहता है।

दोनों को साथ पढ़िए: अल्लाह ने हाथी वाले लश्कर को तबाह किया... ताकि क़ुरैश को वो मानूसियत और अमन हासिल रहे। दूसरे लफ़्ज़ों में, बेटा: तुम्हारे क़ाफ़िले आज भी महफ़ूज़ सफ़र करते हैं, तुम्हारा शहर बर्बाद नहीं हुआ, तुम ज़िंदा हो और तिजारत कर रहे हो — इसकी वजह सिर्फ़ यह है कि अल्लाह ने इस घर की हिफ़ाज़त की।

'लि-ईलाफ़ि क़ुरैश — क़ुरैश की ईलाफ़ की ख़ातिर — ईलाफ़िहिम रिह्लतश्-शिता-इ वस्-सैफ़ — सर्दी और गर्मी के सफ़र की उनकी ईलाफ़ की ख़ातिर।'

बेटा, 'ईलाफ़' एक ख़ूबसूरत लफ़्ज़ है। यह 'उल्फ़त' से है — उन्सियत, मानूसियत, आपस में जुड़ा होना, किसी चीज़ का महफ़ूज़ तौर पर आदत बन जाना। मतलब यह कि अल्लाह ने ये सफ़र उनके लिए मानूस, मामूल और महफ़ूज़ बना दिए — बेहतरीन

माने में 'रूटीन' बना दिए।

तो उन्हें चाहिए कि इबादत करें

'फ़ल्-य'बुदू रब्ब हाज़ल्-बैत — तो उन्हें चाहिए कि इस घर के रब की इबादत करें।'

बेटा, यही इस सूरह का असल मक़सद है, और देखिए दलील किस तरह बनी है। यह नहीं कहा गया: अल्लाह की इबादत करो क्योंकि वो ताक़तवर हैं, या क्योंकि वो सज़ा देंगे। कहा गया: अपनी ज़िंदगी के उन मख़्सूस, साफ़ नज़र आने वाले एहसानात को देखो — और अब अपनी इबादत उनके सरचश्मे की तरफ़ मोड़ दो।

और अल्फ़ाज़ ग़ौर से देखिए: 'रब्ब हाज़ल्-बैत' — इस घर का रब। यहाँ 'रब्बुल आलमीन' नहीं कहा गया, हालाँकि वो यही हैं। अल्लाह ने अपना ता'आरुफ़ उसी इमारत के हवाले से कराया जिससे क़ुरैश अपनी इज़्ज़त लेते थे।

क्योंकि उनका तज़ाद यही था, बेटा: वो उस घर से मोहब्बत करते थे, उसकी ख़िदमत करते थे, अपना पूरा मर्तबा इसी से लेते थे कि वो 'घर वाले' हैं — और फिर उसी को तीन सौ साठ बुतों से भर रखा था। वो इमारत का एहतिराम करते थे और उसके मालिक को नज़रअंदाज़ करते थे।

बेटा, ईमानदारी से पूछिए कि क्या हमारा भी कोई अपना रूप इस जैसा है। ऐसे लोग जो दीन की अलामतों से मोहब्बत करते हैं — इमारत, ख़त्ताती, त्योहार, पहचान, ख़ानदानी रिवायत — और इन सबके मालिक को उनके दिन का बहुत कम हिस्सा मिलता है। यह मुमकिन है कि इंसान घर से गहरा लगाव रखे और उसके रब से मुतआरिफ़ ही न हो।

भूख में खाना, ख़ौफ़ में अमन

और फिर अल्लाह ने दो एहसानात का नाम लिया — और बेटा, उन्होंने इंसान की दो बुनियादी तरीन ज़रूरतें चुनीं:

'अल्लज़ी अत'अ-महुम मिन जू' — जिसने उन्हें भूख में खाना खिलाया — व आ-म-

नहुम मिन ख़ौफ़ — और उन्हें ख़ौफ़ से अमन दिया।'

बेटा, सोचिए कि अल्लाह ने क्या चुना। दौलत नहीं। फ़तह नहीं। इज़्ज़त नहीं। खाना और अमन।

और मक्का की हालत देखिए: एक बे-आब-ओ-गियाह वादी, न नहर, न खेत, न फ़सल। ख़ुद इब्राहीम (अलैहि0) ने अपनी दुआ में उसे यूँ बयान किया: 'ऐ हमारे रब, मैंने अपनी कुछ औलाद को एक ऐसी वादी में बसाया है जिसमें खेती नहीं' — और उन्होंने अल्लाह से दुआ की कि उन्हें फलों का रिज़्क़ अता फ़रमाएँ। और वैसा ही हुआ: जिस शहर में कुछ उगता नहीं, वहाँ हर मुल्क के फल रोज़ाना पहुँचते हैं। बेटा, मक्का को ज़मीन ने नहीं, तिजारत और हज ने खिलाया। यह एक क़ायम-शुदा मोजिज़ा है, जो एक नबी की दुआ का हज़ारों साल बाद जवाब दे रहा है।

और 'आ-म-नहुम मिन ख़ौफ़' — उस जज़ीरे में अमन जहाँ आदमी की जान उसके क़बीले की तलवारों पर मौक़ूफ़ थी।

बेटा, अब इसे अपनी ज़िंदगी में लाइए, क्योंकि ये दो आयतें आपके शुक्र की एक फ़ेहरिस्त हैं।

खाना: आख़िरी बार कब आपने पूरा दिन बग़ैर कुछ खाए गुज़ारा, अपनी मर्ज़ी के बग़ैर, इस हाल में कि खाने की कोई सूरत ही न हो? हम में से अक्सर ने असल भूख जानी ही नहीं — सिर्फ़ ख़्वाहिश जानी है। हर वो दिन जिसमें पेट भर गया, एक ऐसी नेमत है जिसे अल्लाह ने अपनी किताब में नाम ले कर ज़िक्र करने के क़ाबिल समझा।

अमन: आख़िरी बार कब आप रात को इस हाल में लेटे कि वाक़ई यक़ीन न हो कि सुबह तक ज़िंदा रहेंगे? इस वक़्त ज़मीन पर लाखों लोग इसी हाल में हैं। और नबी ﷺ ने फ़रमाया: तुम में से जो सुबह इस हाल में करे कि वो अपने घर में महफ़ूज़ हो, अपने जिस्म में तंदुरुस्त हो, और उसके पास उस दिन का खाना हो — तो गोया उसके लिए पूरी दुनिया जमा कर दी गई।

बेटा, इस हदीस को दोबारा आहिस्ता पढ़िए। अमन, सेहत, और आज का खाना। अगर ये तीन चीज़ें हैं, तो आपके हाथ में दुनिया दे दी गई — और यह सूरह कहती है कि इसका

सही जवाब इबादत है।

दलील की तरतीब

बेटा, आख़िर में इस छोटी सूरह की तरतीब पर एक नज़र, क्योंकि यह आपको अपनी ज़िंदगी के बारे में सोचने का तरीक़ा सिखाती है।

यह सूरह किसी हुक्म से शुरू नहीं होती। यह नेमतों के बयान से शुरू होती है — सफ़र, मानूसियत, अमन — और फिर हुक्म आता है: 'तो उन्हें चाहिए कि इस घर के रब की इबादत करें।'

दूसरे लफ़्ज़ों में, बेटा: शुक्र पहले आता है, और इताअत उसी से उगती है। अल्लाह ने उनसे कुछ माँगने से पहले उन्हें यह याद दिलाया कि उन्होंने क्या किया है।

और यही अपनी इबादत को ज़िंदा रखने का तरीक़ा है। जब नमाज़ भारी लगने लगे और ज़िक्र मशीनी हो जाए, तो मसला अक्सर नज़्म-ओ-ज़ब्त की कमी नहीं होता — याद करने की कमी होता है। जिस शख़्स ने अभी अभी अपनी नेमतें गिनी हों, उसे नमाज़ आसान लगती है। और जो शख़्स समझता हो कि जो कुछ उसके पास है वो उसका हक़ है, उसे हर इबादत बोझ लगती है।

तो बेटा, अगली नमाज़ से पहले दस सेकंड लीजिए: यह जिस्म, यह खाना, यह छत, यह अमन, ये घर वाले, और यह किताब उस ज़ुबान में जिसे मैं पढ़ सकता हूँ — सब दिया हुआ, कुछ भी कमाया हुआ नहीं। फिर खड़े हो जाइए।

और आख़िर में इस सूरह की नर्मी देखिए। यह क़ुरैश से ख़िताब कर रही है — वही लोग जो नुज़ूल के वक़्त नबी ﷺ पर ज़ुल्म कर रहे थे। अल्लाह 'ऐ मुजरिमो' से बात शुरू नहीं करते। वो उन क़ाफ़िलों की याद दिला कर शुरू करते हैं जिनसे उनके बच्चों का पेट भरता है।

बेटा, अल्लाह लोगों को यूँ वापस बुलाते हैं: पहले नर्मी से। यह याद रखिए जब आप किसी ऐसे शख़्स को राह दिखाना चाहें जिससे आपको मोहब्बत है।

इस सूरह से क्या सीखा

1. अपनी नेमतों की ज़ंजीर पीछे ले जाइए: अमन, आमदनी, मामूल — ज़ंजीर हमेशा अल्लाह पर ख़त्म होती है।

2. घर का एहतिराम और उसके मालिक से ग़फ़लत साथ न चलें — दीन की अलामतों से मोहब्बत इबादत नहीं है।

3. अल्लाह ने दो सबसे बुनियादी तोहफ़ों — खाना और अमन — को पूरी ज़िंदगी की इबादत के लिए काफ़ी वजह क़रार दिया।

4. मक्का का रिज़्क़ इब्राहीम (अलैहि0) की दुआ का हज़ारों साल बाद जवाब है: अल्लाह के जवाब माँगने वाले से ज़्यादा ज़िंदा रह सकते हैं।

5. अगर आप महफ़ूज़, तंदुरुस्त और आज के खाने के साथ उठे हैं, तो आपको दुनिया दे दी गई।

6. शुक्र पहले और इताअत उसी से उगती है — इबादत के बोझल होने की शिकायत से पहले नेमतें गिनिए।

7. अल्लाह अपने मुख़ालिफ़ों को भी नर्मी से बुलाते हैं — जिसे राह दिखाना चाहते हैं, उसी तरीक़े से दिखाइए।

या अल्लाह, इस घर के रब, जिसने हमें भूख में खिलाया और ख़ौफ़ से अमन दिया — हमें अपनी अताओं के लायक़ बंदा बना दीजिए। आमीन।